● सुनो, समझो और दोहराओ :

१२. जादुई अँगूठी

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने अंधविश्वास की निरर्थकता एवं मेहनत की महत्ता को दर्शाया है ।

जरा सोचो ..... बताओ

अगर तुम 'शक्तिमान' बन जाओ तो ..... ।

चंदन एक खिलाड़ी और मस्त-मौला किस्म का लड़का था । पूरे-पूरे दिन संतरंगी तितलियों के पीछे -पीछे भागता रहता । कभी किसी बाग में चोरी से घुस जाता और रखवाले की आँख बचाकर फल चुरा लाता। इस तरह के कामों में उसे बड़ा आनंद आता । पिता जी उसे पढ़ने के लिए कह-कहकर थक जाते पर उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती ।

उसका दिमाग नित नई शैतानी करने के तरीके सोचता रहता । पढ़ाई में उसका मन बिलकुल नहीं लगता था । स्कूल में रोज उसे डाँट सुननी पड़ती । उसी की कक्षा में शेखर भी पढ़ता था । वह एक तेज, मेधावी छात्र था । सभी अध्यापक-अध्यापिकाएँ उसकी प्रशंसा करते थे ।

शेखर सदैव बाएँ हाथ की अँगुली में एक लाल नगवाली अँगूठी पहने रहता था । चंदन के दिल में यह विश्वास बैठ गया था कि वह कोई जादुई अँगूठी है जिसके कारण शेखर सदैव पढ़ाई में आगे रहता है ।

चंदन दिन-रात यही मनसूबे बनाता कि किसी तरह उसे भी कोई ऐसी ही जादुई अँगूठी मिल जाए तो वह शेखर को हर चीज में पिछाड़ दे । स्कूल की फुटबॉल टीम का चयन होने वाला था । फुटबॉल चंदन का प्रिय खेल था । अतः उसकी चिंता बढ़ती जा रही थी । अंत में उसने शेखर से यह पता लगाने का फैसला किया कि उसे वह जादुई अँगूठी कहाँ से मिली ?

अगले ही दिन चंदन, शेखर के पास जाकर बहुत प्यार से बोला ''शेखर, तुम्हें यह जादुई अँगूठी कहाँ से मिली ? मुझे बताओ जरा ।''

शेखर हँसता हुआ बोला, ''अरे, यह साधारण अँगूठी है । जादुई अँगूठी तो बस किस्से-कहानियों में होती है, तुम किस चक्कर में पड़े हो ?''

शेखर के बहुत समझाने पर भी चंदन को विश्वास नहीं हुआ । उसे लगा, शेखर उसे बताना नहीं चाहता है। उन दोनों की बातें पास खड़ा पवन ध्यान से सुन रहा था । उसे चंदन को मूर्ख बनाने का अच्छा मौका मिला। चंदन उसे कई बार परेशान कर चुका था । वह पास आकर बोला, ''चंदन, मैं एक बाबा जी को जानता हूँ, तुम चाहो तो मैं तुम्हें उनसे मिलवा सकता हूँ।'' चंदन

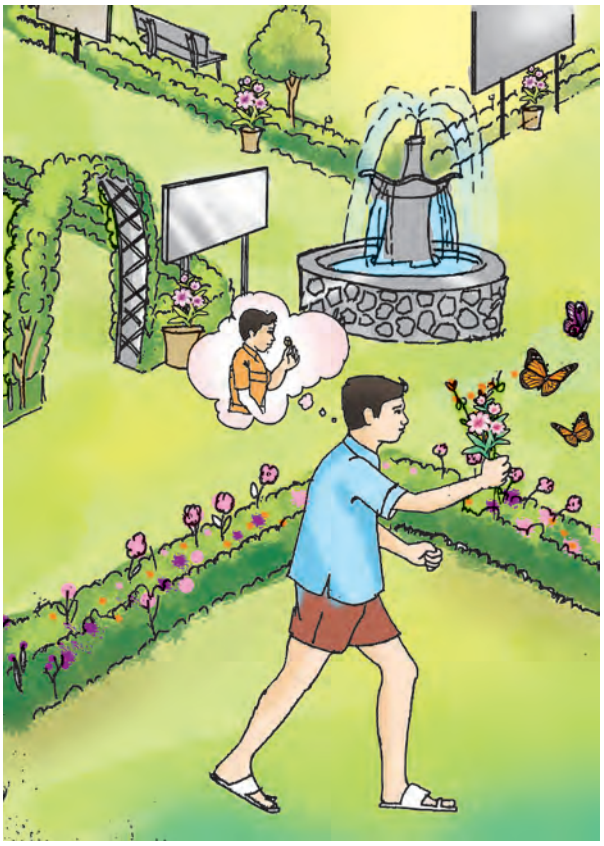

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी का मुखर वाचन करवाएँ । विद्यार्थियों को कहानी के आशय से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें । कहानी का कौन-सा पात्र और घटना अच्छी लगी, क्यों ? पूछें । कक्षा में कथा-कथन के कार्यक्रम का आयोजन करें ।

मेरी कलम से

'जंगल का पत्र मनुष्य के नाम' इस विषय पर पत्र लिखो ।

की आँखें खुशी से चमक उठीं परंतु शेखर ने पूछा, ''अगर तुम जानते हो तो तुमने अपने लिए क्यों नहीं खरीदी जादुई अँगूठी ?''

पवन जल्दी से बोला, ''वह अँगूठी महँगी है । मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं । अगर चंदन के पास हैं तो उसे लेने दो, तुम्हें क्या परेशानी है ?''

शेखर के लाख समझाने पर भी चंदन पवन के साथ चल दिया और घर जाकर अपने गुल्लक के सारे पैसे निकाल लाया । पूरे सौ रुपये थे । उसे लेकर वे सड़क के किनारे बैठे एक आदमी के पास पहुँचे । वह एक बड़े कागज के टुकड़े पर अनेक नगीने और अँगूठियाँ रखे हुए था । दोनों उसके पास जाकर अँगूठी देखने लगे ।

पवन ने एक अँगूठी उठाकर दिखाई, ''देखो ये कितनी चमक रही है, यही ले लो, बहुत सुंदर है ।''

चंदन सिर हिलाते बोला, ''यह जादुई नहीं है ।''

''तुम्हें कैसे पता ?''

''पवन, इनके नगीनों के रंग देख रहे हो, कोई भी लाल नहीं है ।''

अँगूठीवाला आदमी ध्यान से दोनों की बातें सुन रहा था । बोला, ''तुम्हें क्या जादुई अँगूठी चाहिए ?''

''हाँ'' दोनों एक साथ बोल उठे । अपने झोले से उसने एक गुलाबी नगीने की अँगूठी निकाली और बोला, ''यह है जादुई अँगूठी । रंग से कुछ नहीं होता लेकिन बेटा, यह पूरे दो सौ रुपये की है ।''

''मेरे पास तो केवल सौ रुपये ही हैं ।'' चंदन सिर झुका कर बोला । वह बहुत निराश हो गया था ।

उसपर दया दिखाते हुए वह आदमी बोला, ''ठीक है, तुम्हें सौ रुपये में ही दे देता हूँ, ले जाओ ।''

चंदन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था । अगले दिन स्कूल की फुटबॉल टीम का चयन होना था । चंदन खुशी-खुशी अँगूठी पहनकर अपनी साइकिल पर सवार होकर स्कूल की ओर चल दिया । अपनी धुन में वही टीम का कैप्टन बनने का सपना देखता चला जा रहा था कि उसकी साइकिल एक पत्थर पर चढ़ गई और वह साइकिल समेत गिर पड़ा । उसे काफी चोट आई । एक राहगीर उसे उठाकर अस्पताल ले गया । उसके एक पैर पर प्लास्टर चढ़ाना पड़ा । वह आश्चर्य चकित-सा अपनी जादुई अँगूठी को देख रहा था । कैप्टन बनना तो दूर की बात, वह तो चयन प्रक्रिया में भी शामिल नहीं हो सका था ।

शेखर उसे देखने आया । चंदन ने उससे विनती की कि वह उसे सही जादुई अँगूठी का पता बता दे । शेखर उसे बहुत देर तक समझाता रहा । शेखर जैसे ही उसके कमरे से बाहर निकला, चंदन के पिता ने उससे पूछा कि यह जादुई अँगूठी का क्या किस्सा है ? पूरी बात जानकर उन्होंने एक योजना बनाई । थोड़ी देर बाद चंदन की माँ की ओर देखकर बोले, ''कई दिनों से सोच रहा हूँ कि चंदन के लिए जादुई अँगूठी खरीद दूँ ।''

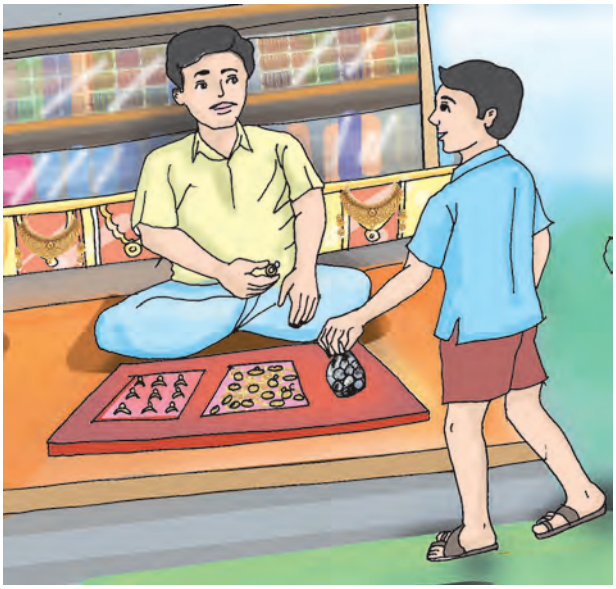

❑ अंधविश्वास फैलाने वाली बातों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर चर्चा कराएँ । विद्यार्थियों को कहानी के केंद्रीय विचार का लेखन करने के लिए प्रेरित करें । उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्नों की विविधता को ध्यान में रखकर इस कहानी से पाँच प्रश्नों की निर्मिति कराएँ ।

खोजबीन

वर्षाजल का संग्रह करने हेतु चलाई जाने वाली सरकारी योजनाओं संबंधी जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

खुशी से चहककर चंदन बोला, ''क्या आप सच कह रहे हैं?'' माँ ने बात बीच में ही काटी, ''अरे ! वह तो बहुत महँगी आती है, एक हजार रुपये की है ।''

''पैसे की कोई बात नहीं है, अँगूठी तो मैं खरीद दूँगा लेकिन समस्या उसे पहनने की शर्त है ।''

चंदन जल्दी से बोल पड़ा , ''पिता जी जादुई अँगूठी पहनने की हर शर्त मैं मानने को तैयार हूँ ।''

''बेटा, उस अँगूठी को पहनने वाले को सभी काम समय से करने पड़ते हैं । हमेशा सच बोलना पड़ता है । खेलने का समय, पढ़ने का समय सब कुछ नियम से बँध जाता है ।'' पता नहीं, इतना कड़ा नियम तुम पालन कर पाओगे या नहीं । ऐसा न करने पर उस अँगूठी की जादुई ताकत कम हो जाती है ।''

''मैं वादा करता हूँ पिता जी । आपका विश्वास नहीं तोड़ूँगा ।'' पिता जी ने उसे अँगूठी ला दी । लाल रंग की चमचमाती हुई अँगूठी पाकर चंदन की खुशी का ठिकाना नहीं था परंतु उसे अपना वादा भी याद रहा । उसने पढ़ना शुरू किया । उसका सब काम पूरा हो गया । साथ ही उसका पढ़ाई में मन भी लगने लगा ।

वह मुग्ध भाव से अपनी जादुई अँगूठी को देखता और अपने अंदर आ रहे परिवर्तन को महसूस करता । उसे लगता वह धीरे-धीरे शेखर जैसा होता जा रहा है । उसकी कमियाँ दूर भाग रही हैं । धीरे-धीरे वह पुनः स्कूल जाने लगा । अब वह कक्षा में प्रश्नों के उत्तर देता, अध्यापकगण उसकी प्रशंसा करते । शेखर के प्रति उसके मन का मैल धुल चुका था ।

आज उसका परीक्षाफल निकला था । कक्षा में हमेशा की तरह शेखर प्रथम आया था परंतु द्वितीय स्थान पर अपना नाम सुन कर चंदन की आँखों से खुशी के आँसू निकल पड़े । हमेशा किसी तरह से पास होने वाला वह कक्षा में पोजीशन ले आएगा, कौन कल्पना कर सकता था ?

खुशी से उछलता हुआ चंदन घर पहुँचा तो उसके माता-पिता बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे । अपना परीक्षाफल पिता जी को देकर चंदन बोला, ''पिता जी यह देखिए इस जादुई अँगूठी का कमाल । आपके रुपये बरबाद नहीं गए । मैं कक्षा में द्वितीय आया हूँ ।''

पिता ने उठकर उसे गले लगा लिया और बोले, ''बेटा, जादू इस अँगूठी में नहीं था । जादू तो था तेरी मेहनत में । तुम्हारी मेहनत का जादू ही आज रंग लाया है ।'' ''क्या ?'' आश्चर्य से चंदन बोला ।

तब तक शेखर वहाँ आ गया था । बोला, ''हाँ चंदन, यह अँगूठी तो सिर्फ एक रुपये की है । तुम्हारे पिता जी के कहने पर मैंने ही इसे ला कर दी थी ।''

अब चंदन को सारी बात समझ में आ गई थी । उसका आत्मविश्वास जग गया था । मुस्कराकर बोला, ''पिता जी आपने तो मुझे जादुई अँगूठी के बजाय मेहनत का जादुई खजाना ही दे दिया ।''

चारों के चेहरे पर खुशी की मुसकान खिल उठी ।

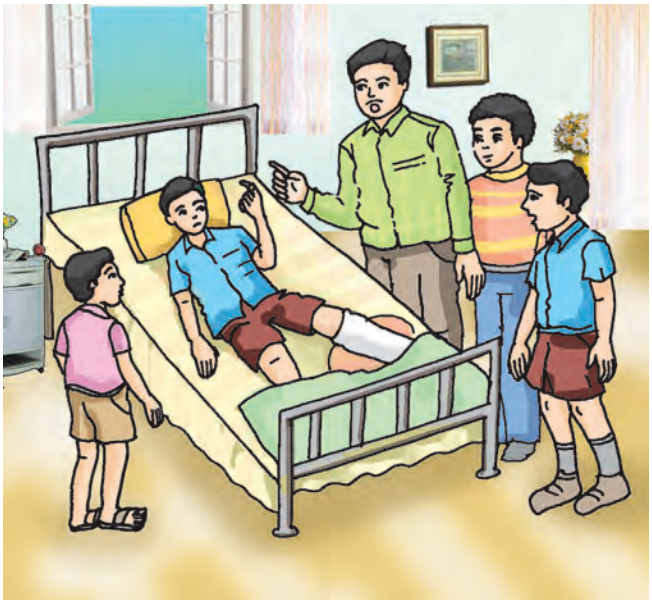

❑ कहानी में आए उपसर्ग एवं प्रत्ययवाले शब्दों को ढुँढ़वाकर उनका वर्गीकरण कराएँ । पाठ में आए विराम चिह्नों के नाम बताने के लिए प्रेरित करें । अंधविश्वास निर्मूलन संबंधी संवाद प्रस्तुत करने के लिए कहें । पास-पड़ोस से अंधविश्वास दूर करने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मेधावी = बुद्धिमान

मनसूबे = युक्ति, विचार, योजना

मुग्ध = प्रसन्न

मुहावरे

कान पर जूँ तक न रेंगना = कुछ असर न होना

खुशी का ठिकाना न होना = अत्यधिक प्रसन्न होना

स्वयं अध्ययन

तुम्हें कौन-से खेल पसंद हैं ? उनके बारे में दिए गए मुद्दों के आधार पर विस्तारपूर्वक चर्चा करो :

- नाम
- खिलाड़ियों की संख्या
- खेल का मैदान
- खेल की विधि

विचार मंथन

।। बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताय ।।

सुनो तो जरा

इन शब्दों का प्रयोग करते हुए नई कहानी बनाकर सुनाओ :

- गिलास
- सिक्के
- बुढ़िया
- कलाकार

बताओ तो सही

किसी अंतरशालेय स्पर्धा के उद्घाटन समारोह का सूत्र संचालन कैसे करोगे ?

वाचन जगत से

निम्न व्यक्तियों की सफलता संबंधी जानकारी पढ़ो :

- शिक्षाविद
- कलाकार
- खिलाड़ी

अध्ययन कौशल

हिंदी-अंग्रेजी मुहावरों का द्विभाषी लघुकोश बनाओ तथा अपने लेखन में प्रयोग करो ।

जैसे - जैसे को तैसा = Tit for tat.

*** निम्न वर्णन किनके हैं, लिखो :**

(क) मेधावी छात्र = --------

(ख) साइकिल पर सवार होने वाला = ---------

(ग) चंदन को मूर्ख बनाने वाला = ---------

(घ) चमचमाती अँगूठी लाने वाले = ---------

(च) बेसब्री से प्रतीक्षा करने वाले = ----------

(छ) परीक्षा में द्वितीय स्थान पाने वाला = ----------

सदैव ध्यान में रखो

जादू केवल मनोरंजन का साधन है ।

* शब्द पहेली हल करो :

१		२		■	■	३		४
	■		■	५			■	
६		■	७	■	■	८		
■	■	■	९	१०		■	■	
११	■	१२			■	■	१३	■
	■	■		■	■	१४		■
१५		१६	■	■	■		■	■
■	■	१७		■	१८		१९	
२०			■	२१		■		■

बाएँ से दाएँ : १. जुगाली करना (४ अक्षर), ३. उगना (३), ५ अनेक प्रकार के (३), ६. छोटी (२), ८. भारत का राष्ट्रध्वज (३), ९. जन्मभूमि (३), १२. खेती करने वाला (३), १४. चुप रहना (२), १५. गौरव (३), १७. आकाश (२), २०. विस्तार (३), १७. आकाश १८. प्रकाश देने वाला एक साधन (४), २०. विस्तार (३), २१. खोपड़ी (२) ।

ऊपर से नीचे : १. हवा (३ अक्षर), २. देश (२), ३. प्रगति (३), ४. प्रशंसा का गीत (४), ७. व्यवसाय करने वाला (४), १०. शरीर (२), ११. रंगहीन (३), १३. जानकारी (२), १४. ऋतु (३), १६. मनुष्य (३), १८ भारत का राष्ट्रीय पक्षी (२), १९. बालक (२) ।

भाषा की ओर

निम्न शब्दों के युग्म ढूँढ़ो तथा इनका प्रयोग करते हुए उचित वाक्य कॉपी में लिखो :

चहल — पहल

..... — पड़ोस

टेढ़ा — .....

जीवन — .....

चढ़ाव — .....

चाल — .....

..... — भाटा

लेन — .....